पार्ट 3

प्रश्न 16. पुरूष परीक्षाके युद्धवीर कथाक वर्णन करू।

उत्तर :– युद्धवीरक कथा सुनिके कायर, आलसीमे स्वतः बदलाव अबैत छैक। कायर शूर आ आलसी उद्यमी भ जाइछ। ओहने एक युद्धवीरक कथा अछि। ओ युद्धवीर मिथिलाक कर्णाटवंशमे उत्पन्न नान्यदेव नामक राजा छलाह। हुनक बालक मल्लदेव। कुमा मल्लदेव स्वभावहिसँ सिंह सन पराक्रमरसिक छलाह। ओ मनहि मन विचारल हम युवराज तँ छी, मुदा पिताक उपार्जित राज्यमे सुखक अनुभव करैत छी, ई हमर पौरूष नहि थिक।

कायर, नेता ओ स्त्री इएह पराश्रित भ जीबैत अछि। सिंह ओ सत्पुरूष तँ अपन बलक दर्प पर जीबैत अछि।

पिताक प्रति भक्तियो तँ अपन उपार्जित सम्पत्तिहिसँ संभव थिक। कहलो अछि–

पिताके कतबो पुत्र रहथुन ओ जाहि बेटाक कमाइ खाइत छथि, जकर यश सुनैत छथि तकरे सँ ओ बेटाबला कहबैत छथि।

ते कतहु जा क अपन बाहुबलसँ पुरूषार्थ करी, ई बिचारि कुमार कन्नौज नामक जनपद गेलाह। ओतय जयचन्द्र नामक राजा ओतय जनिक आधिपत्य काशी धरि छल, पहुँचि सैनिक पद्धतिसँ भेट कयल। ओ राजा हुनका सत्कारपूर्वक अपन प्रिय सहचर बनाओल। कुमार हुनक आदरमे विषमता बुझि पड़लनि। कहल जाइछ जे थोड़बो गुणबला विषय वस्तु यदि दुर्लभ रहैछ तँ ओहिमे आदरभाव रहैछ। किन्तु अधिको गुणबला यदि सुलभतासँ भेटैत अछि त ओहिमे निश्चय राजालोकनिक अनादर भावना होइछ छनि। कुमार पुनः बिचारलनि–

तृष्णासँ भरल लोकक प्राण धन थिकैक, आगिक प्राण जारनि, कामीक प्राण कामिनी, तहिना मनस्वीक प्राण मान थिकनि।

यैह सब बिचारि कुमार राजाके कहलनि देव। अपनेक प्रभत्व सुंनि हम एतय अएलहुँ, आब आनठाम जायब। राजा बजलाह कुमार। अहाँक उद्वेगक कारण की भेल जे आनठाम जायब? कुमार मल्लदेव कहल अपनेक आदर क्रमशः हमरा विषयमे शिथिले भेल जायत, तकरे आशंका सँ एखन आनठाम जा रहल छी। राजा बजलाह ई कथा कोना बुझना गेल? कुमार बजलाह हमरालोकनिक आदर तँ शूरताक निमित्त होइछ, शूरता वाग्युद्धसँ नहि

Scanned by CamScanner

बुझाओल जा सकैछ। अस्त्रयुद्ध अहाँक राज्यमे देखितहि नहि छी। राजा बजलाह समुद्र पर्यन्त हम राजस्व ग्रहण राज्यमे देखितहि नहि छी। किंतु नैयायिक छलाह आओर ते हिनक मत न्यायशास्त्र पर आधारित अछि। हिनक अनुसार भरतक रस सूत्रक संयोगात् शब्दक अर्थ अछि अनुमान्य अनुमापक सम्बन्धात एवं निष्पत्ति शब्दक अर्थ अछि अनुमितिः। एहि अनुमितिक आधार पर हिनक मत अनुमितिवाद वा अनुमानवाद कहौलक।

शंकुक मान्यता अछि जे नटमे अनुकार्यक आरोप नहि कयल जाइछ अपितु चित्र–तुरंग न्यायसँ हुनक अनुमान क लेल जाइत अछि। चित्र तुरंग न्यायक अर्थ होइछ बच्चा जकाँ घोड़ाक चित्रके वास्तविक घोड़ा बूझि लेब। दर्शक लोकनि अभिनयमे ततबा तन्मय भ जाइत छथि जे ओ नटके वास्तविक राम बूझि रसानुभूति कर लगैत छथि।

हिनकासँ पूर्वक आचार्य भट्टलोल्लट तीन प्रकारक सम्बन्ध माननें छलाह उत्पाद्य उत्पादक गम्य गमक एवं पोष्य पोषक सम्बन्ध मुदा श्री शंकुक एके टा सम्बन्ध माननें छथि अनुमाप्य अनुमापक सम्बन्ध। एकर अभिप्राय ई अछि जे विभाव, अनुभाव एवं संचारी भाव तीनू रसक अनुमापक अछि एवं रस ओकर अनुमेय–अनुमितिक योग्य। ई अनुमिति ज्ञाने दर्शकलोकनिक रसास्वादक कारण बनैत अछि। ई अनुमिति ज्ञान लोकप्रसिद्ध चारि प्रकारक ज्ञान सम्यक ज्ञान, मिथ्या ज्ञान, संशय ज्ञान, सादृश्य ज्ञान (ई रस्सी साँपहिक सदृश अछि) सँ विलक्षण चित्र तुरंग प्रतीतिक सदृश होइत अछि।

सारांश ई जे कोनो स्थानमे वास्तविक घूम नहियो रहने घूम बूझि लेला पर जेना घूम–नियत बहिक अनुमान होइत अछि तहिना नटमे वास्तविक विभावादिसँ रतिक अनुमान होइत अछि आओर ओ अनुमित रति अपन सौन्दर्यक प्रसादात् दर्शक सामाजिक लोकनिमे आस्वाद्यमान भ चमत्कार उत्पन्न करैत रसत्वके प्राप्त करैत अछि। इएह रसानुमिति रस निष्पति अछि।

शंकुकक उपर्युक्त मत सेहो सर्वथा दोषमुक्त नहि अछि। गंभीरतापूर्वक विचार कएला पर ई स्पष्ट होइछ जे अनुमिति कखनहुँ सम्पूर्णतः आनन्दप्रद नहि भ सकैछ कारण लङुक चित्रके देखि ओकर स्थितिक अनुमान तँ कयल जा सकैत अछि, किन्तु ओ अनुमान लङु खयबाक तृप्ति प्रदान नहि क सकैछ। आनन्द अनुमानमे नहि प्रत्यक्ष अनुभूतिमे निहित अछि। अनुमानक स्वतः ध्वनित होइत अछि। ते दर्शकके पूर्ण आनन्द प्राप्त नहि भ सकैत छन्हि।

Scanned by CamScanner

भट्ट नायकक भुक्तिवाद वा भोगवादः भरतसूत्रक तेसर व्याख्याता आचार्य भट्टनायक सांख्यमतानुयायी छलाह आओर ते हिनक रस विवेचन सांख्या दर्शनानुकूल अछि। हिनक अनुसार भरतक रस सूत्रक संयोगातक अर्थ अछि भावनात् एवं निष्पत्ति क अर्थ अछि भुक्ति।

भट्टनायक, भट्टलोल्लटक आरोप एवं शंकुकक अनुमिति क विरोध करैत एकटा नव काव्य क्रियाक कल्पना कयने छथि आओर से अछि भोजकत्व। एहि व्यापार द्वारा ओ रसानुभव मानने छथि। एहि व्यापारसँ पहिने ओ दुइटा आओर व्यापार मानने छथि अभिधा एवं भावना वा भावकत्व, व्यापार अभिधा व्यापार, अर्थ विषयक, भावकत्व व्यापार रसादि विषयक एवं भोकत्व व्यापार सहृदय विषयक, होइत अछि। अभिधासँ अर्थ ज्ञानक पश्चात् भावकत्व व्यापार साधारणीकरणक स्थिति अछि। एकर फलस्वरूप सामाजिक दर्शक नाटकक पात्रके विशिष्ट व्यकित नहि बूझि अपने सदृश स्त्री पुरूष बुझैत छथि। भावकत्वसँ साधारणीकरणक द्वारा रसादिक भक्ति भ गेला पर भोजकत्व रूप तृतीय व्यापारसँ सहृदय ओहि भावित रसक भोग करैत छथि। इ भोग वा अस्वाद अनुभव एवं स्मृतिसँ सर्वथा विलक्षण होइत अछि। ई भोग वा अस्वाद अनुभव एवं स्मृतिसँ सर्वथा विलक्षण होइत अछि एवं चित्तक द्रुति, विस्तार एवं विकास रूप होइत अछि। ई सत्वमय, निज चेतन स्वरूप, आनन्दमय, ब्रह्मानन्द सहोदर होइत अछि।

Scanned by CamScanner